१५-अगस्त १९७३ को लाल किला, दिल्ली
से दिया गया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा
गांधी का भाषण

1330

दिनांक: १५-८-७३

अरुनो, भाइयो, नौजवानों और प्यारे बच्चों,

एक बार फिर हम इस ऐतिहासिक स्थान पर इकट्ठा हैं अपनी स्वतंत्रा की वर्षगांठ मनाने। अपने प्यारे तिरंगे की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करने, अपनी प्यारी जनता की सेवा करने की प्रतिज्ञा करने केलिए। हमारा यह उत्सव वर्षा ऋतु में पड़ता है जब कि धूप और छांव आंख-मिचौनी खेलती हैं। यह उसका प्रतीक है कि हमारे राष्ट्र के जीवन में, जैसे कि व्यक्ति के जीवन में धूप और छांव, सुख और दुःख का मिश्रण हमेशा रहता है। हमारा देश किसानों का देश है, हम वर्षा का स्वागत करते हैं क्योंकि इस पर हमारे किसान भाई और सारा देश निर्भर है। इससे हमारे साधन, सिंचाई के साधन, बिजली के साधन और आवश्यक बहुत से कार्यक्रम निर्भर हैं।

लेकिन आज कुछ दूसरे तरह के बादल भी हमारे ऊपर छाये हैं, वो हैं कठिनाई और तकलीफ के बादल। हमारे देश में कुछ कमियां हैं, कीमतें बढ़ती हैं, बहुत बढ़ी हैं। जनता के क्या कष्ट हैं उनको खूब अच्छी तरह से मैं देख रही हूं, पहचानती हूं। उनको हम छुपाना नहीं चाहते हैं। लेकिन हमको यह भी समझने की कोशिश करनी चाहिये कि यह कमियां कैसे हुई?

आपको मालूम है कि दो साल से सूखा पड़ा। महाराष्ट्र गुजरात, राजस्थान, मैसूर में सालतौर से लेकिन मैसोर और दूसरे प्रान्तों में भी ऐसा भीषण सूखा पड़ा जो पचास वर्ष में देखने को नहीं मिला था। लेकिन हमारे वहां के लोगों ने हिम्मत नहीं हारी। इन क्षेत्रों का मैंने दौरा किया और जो भावना उनकी थी, जो हिम्मत उनकी थी, उसकी मैं सराहना हूं। जो कुछ बाहर के लोग दीन स्थिति देखने को वहां पे गये, वो दंग हो गये वहां के लोगों को देख कर। चाहे मिट्टी तोड़ रहे थे, चाहे पत्थर तोड़ रहे थे, चाहे बांध बांध रहे थे, गा-गा के कर

रहे थे। कोई शिकायत नहीं कर रहा था। बार कुछ मांग रहे थे तो फिर से बसने के साधन। यह हिम्मत हमको सारे देश में फैलानी है। क्योंकि सूखा पड़ा ऐसी जगह विशेषकर जहां कि बाजरा-ज्वार-मूंगफली ऐसी चीजें पैदा होती हैं। तो इन चीजों की कमी हुई, भाव बढ़े बढ़े और एक चीज़ की कमी हुई तो दूसरी चीजों पर भी उसका ज्यादा मांग बढ़ी दूसरे चीजों की और उनके दाम भी बढ़े। कुछ दाम बढ़ने के तो कारण थे इन चीजों के, और बहुत सी चीजों के दाम केवल इसलिए बढ़े कि दाम बढ़ रहे हैं। याने बिना किसी वजह के। कुछ यह सूखे की हालत केवल हमारे देश में नहीं, बहुत बड़े भाग एशिया और अफ्रीका के देशों में भी पड़ा, और वो लोग भी बाहर से अनाज खरीदने को तैयार हुए और बड़े पैमाने में खरीदा। इससे बाहर के अनाज का भाव बढ़ा, उसका असर भी हमारी कीमतों पे पड़ा। कीमतें केवल इन देशों में नहीं, जो धनी देश हैं, बहुत आगे बढ़े हुए देश हैं वहां भी कीमतें बहुत जोरों से बढ़ीं। वहां के भी समाचार पत्र पढ़िये, लोगों से बातें कीजिए, तो उनकी भी कहानी एक शिकायत की, परेशानी की है। इसके माने नहीं कि वहां पे दाम बढ़ने के कारण और हमारे देश में दाम बढ़ने के कारण एक से हैं, बिल्कुल अलग अलग कारण हैं। लेकिन जब यह आर्थिक हवाएं चलती हैं तो देश की सीमा उनको रोक नहीं सकती हैं, उसका प्रभाव के हमारे देश पे, हमारे चीजों पे, हमारी कीमतों पे पड़ता है। विशेषकर के इसलिए कि जब यहां पे कमी हुई तो बाहर से चीजें खरीदनी जरूरी हो गईं। और वहां के दाम बढ़े तो उसका असर फिर हमारी दूसरी वस्तुओं पे भी यहां पे हुआ। तो इस तरह से हमें अपनी कठिनाइयों को सारी दुनियां के चित्र में रख के देखनी चाहिये।

यह शिकायत होती है कि सरकार क्या कर रही है। यह दिखाया जाता है कि किस चीज़ पर क्या हो रहा है। क्या अधिकांश किस पर हुआ? जहां सूखा पड़ा वहां के एक करोड़ लोगों को राहत के काम पे लाने पे क्या जबर्दस्त हुआ है। उसके पहले आपको मालूम है कि बंगला देश से शरणार्थी आये जबर्दस्त क्या, एक करोड़ लोगों की देख-भाल पे क्या हुआ। फिर युद्ध पर क्या हुआ। यह सब खप जाता और उसके बाद

की फसल अच्छी होती लेकिन इसका उलट हुआ और क्योंकि इतना जबर्दस्त सूखा पड़ा कि फसल तो खत्म ही हो गई, कूंए सूख गए, झीलें सूख गईं, नदियां भी सूख गईं। तो यह सब एक मुद्रा बढ़ गई। लेकिन सरकार पूरी कोशिश कर रही है कि यह खर्चा कम करे। हमने जो अपने कार्यक्रम, अपने योजना एक एक मंत्रालय के खर्चे कम किये हैं, करीब करीब चार सौ करोड़ की कटौती की है। और प्रत्येक राज्य सरकार से भी कहा गया है, प्रत्येक डिपार्टमेंट सब से कहा गया है कि जो बिल्कुल आवश्यक चीज़ न हो उसमें अपना खर्चा कम करें या अब अभी के लिए उस कार्यक्रम को किनारे रख दें।

अब आप समझेंगे कि क्या यह फिजूल खर्ची थी जो हम आज काट सकते हैं, यह सही नहीं हैं, क्योंकि बहुत से आवश्यक चीजें जो जनता की आवश्यक सेवाएं हैं, उनपे जरूर इससे हानि होगी, लेकिन यह लाचारी का समय है और जैसे कि किसी परिवार को कठिनाई पड़ती है तो देखना होता है कि क्या लेना जरूरी है और कौन काम हम कुछ दिन के लिए रोक सकते हैं। उसी तरह से यह हम-आप भारतीय बड़ा परिवार जो है उसको भी अपने साधन समेटने हैं। और बहुत देख भाल से उसको खर्च करना है। सब से बड़ी जिम्मेदारी तो सरकार की है लेकिन इसमें जनता की भी जिम्मेदारी है कि वो भी इस समय कोशिश करें, निर्णय करें, कि वो भी कमखर्ची करेंगे।

हम सब को गुस्सा चढ़ता है जब हम काले-बाजार की बात सुनते हैं, जब हम सुनते हैं कि जनता को कमी है, लेकिन बहुत बड़े दाम से वही वस्तुएं दुकान में या दुकान के पीछे बिक रही हैं, और इसमें जरा भी सन्देह मुझे नहीं है कि ऐसे लोग जो नाजायज तरीके से सामान को रोकते हैं और ऊंचे दामों से बेचते हैं, वो लोग जो काला बाजार करते हैं, इन से सख्त से सख्त व्यवहार होना चाहिए, सख्त से सख्त इनको सज़ा मिलनी चाहिये। लेकिन यह भी यदि हम सोचें कि यह लोग जो हैं यह क्या कोई अलग जाति है जो यह काम करती है, या हर की में यह लोग मौजूद हैं। यह भी यदि हम सोचें कि अगर कोई काले बाजार में बेचता है तो बहुत से लोग काले बाजार में खरीदने को भी तैयार हैं हो जाते हैं। अगर वो न तैयार हों तो वो कैसे बेच पायें ऊंचे दामों।

से । यदि यह भी हम देखते हैं कि बहुत से लोगों ने अनाज देना रोका, चाहे किसी ही कारण से रोका । अगर आग लगे तो कोई यह नहीं पूछेगा कि पानी कहां से लिया, क्यों लिया, कब लिया । एक ही ख्याल होगा कि कहीं से भी पानी आये आग को बुझाया जाये । जब जनता को अनाज की कमी है तो चाहे हमारी नीति किसी को अच्छी लगे, या बुरी लगे, लेकिन क्या उसका कर्तव्य नहीं है कि अनाज बाहर आये जिसमें जनता को, साधारण जनता को, गरीब आदमी को, कठिनाई न पड़े, वो भूखा न रह जाये । यह कर्तव्य सारी जनता का है ।

हम पर आरोप लगाता है जो हमने गेहूं का थोक व्यापार अपने हाथ में लिया और कुछ लोग समझते हैं कि कमी के यही कारण हैं, लेकिन कोई सबूत इसका नहीं दे सकता है कि अगर यह कदम हमने नहीं उठाया होता तो दुकानें भर जाती गेहूं से । वाक्या तो यह है, कि हमको लगता है और जैसे जैसे एक एक जगह से खबर आती है तो यह साबित होता है कि अगर हम अपने हाथ में नहीं लेते तो शायद यह जो हम ले भी पाये गेहूं, यह भी शायद काले बाजार में चला जाता, और गरीब जनता तक नहीं पहुंच सकता । केवल जो ज्यादा दाम पे तैयार होते लेने, उन्हीं को मिलता । तो यह सच है कि मध्यवर्ग को कष्ट हुआ, शहरों में कुछ कष्ट हुआ, लेकिन किसी न किसी तरह से हमने अनाज जहां जहां सब से ज्यादा जरूरत थी, वहां उसको हम पहुंचा पाये । तो इसलिए मैं नहीं मानती कि यह इस नीति में कोई भी गलती थी । अगर, दूसरी मांग है कि किसानों को ज्यादा ज्यादा हम क्यों नहीं, ज्यादा भाव पे हम क्यों नहीं खरीदते । अब इस समय अगर गेहूं का भाव ज्यादा हम देते हैं तो उसका असर भी दूसरे कीमतों पे और भी पड़ता है और अगर औरों केलिए दाम बढ़ते हैं तो फिर किसानों केलिए भी बढ़ते हैं । तो अन्त में चाहे उन्हें लगे कि पहले कुछ ज्यादा मिल गया, अन्त में हानि उनकी भी और दूसरे सब लोगों की भी होती है । इस तरह से देश के जीवन में हम सब साथ बंधे हुए हैं । कोई जो समझे कि अपने फायदे केलिये वो कुछ कर लें तो थोड़े दिन केलिए वो फायदा हो सकता है, उसका बोझ, उसका प्रभाव, बड़ा भारी फिर हमारे ऊपर आता है ।

जैसे कि जब बंगला देश की लड़ाई चल रही थी, आप से तब भी मैंने आपको आगाह किया था। मैंने कहा था कि अभी आप बहुत खुशी मना रहे हैं, लेकिन इसके दाम हमको भारी देने पड़ेंगे। आर्थिक दाम देने होंगे। तरह तरह के तनाव और बोझ हमें उठाने पड़ेंगे। और ऐसा ही हुआ। उसकेलिए हम तैयार हैं कि नहीं। हमारी सरकार की पूरी कोशिश है, मैं इस अवसरपर आपको आश्वासन देना चाहती हूं कि यह जो समस्याएं, कमी की समस्याएं हैं, महंगाई की समस्याएं हैं, या जो समाज विरोधी लोग हैं, इन सब के बारे में सरकार कड़ी कार्यवाही लेने को तैयार है, कुछ ली भी जा रही है, कुछ कार्यक्रम बने हैं और और कार्यक्रम बनेंगे। लेकिन कोई भी व्यक्ति कोई जादू अकेले नहीं कर सकता है, कोई भी सरकार स्वयं सब चीजों को ठीक नहीं कर सकती।

हमारे देश में लोकतंत्र है। और उसमें बहुत से अधिकार जनता को मिलते हैं और साथ ही बहुत सी जिम्मेदारी भी उन को ओढ़नी पड़ती है। तो इस कार्य में जब तक प्रत्येक व्यक्ति कुछ जिम्मेदारी को, उत्तरदायित्व को, नहीं अपने लेगा, यह स्थिति सुधर नहीं सकती है। मैंने आप के कहा कि अगर कोई बेचता है तो तभी बेच पाता है, अगर कोई खरीदने को तैयार होता है। तो यह जनता की तरफ से सावधानी नहीं होगी तो यह नहीं हो सकता है। सरकार अपनी खर्चा कम करे, यह आवश्यक है, लेकिन जनता खर्चा कम करे, वो भी आवश्यक है। मुझे मालूम है कि हमारे देश में बहुत से गरीब हैं जो जिन का कम करने का तो सवाल ही नहीं आता क्योंकि उनको और आज भी पूरा नहीं मिल रहा है, उनकी बात मैं नहीं कर रही हूं। लेकिन बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो कम से काम चला सकते हैं। दुर्भाग्य से आजकल की कुछ सभ्यता ऐसी हो गई है, और यहां प्रभाव बाहर के देशों से आया है, कि प्रतिदिन और चीजों की जरूरत होती ही जाती है। जिन चीजों का नाम भी थोड़े कम वर्ष नहीं सुना था, थोड़े वर्ष पहले, आज वो आवश्यक वस्तुओं में गिनी जाती हैं। तो थोड़े वर्ष, एक वर्ष केलिए हम निर्णय करें कि इन सब वस्तुओं को हम नहीं खरीदेंगे। एक सादगी की जिन्दगी बितायेंगे, कोशिश करेंगे कि कम से कम में काम चलायें।

इस साल कुछ सौभाग्य है पहले से वर्षा अभी तक अच्छी हुई है। लेकिन नई फसल जो है उसको आने में कुछ महीने लगेंगे। और तब तक हमको काम चलाना है जो हमारा स्टॉक है और जो हम बाहर से खरीद रहे हैं उससे। कोई गम्भीर स्थिति नहीं है अगर जनता का सहयोग मिले, अगर जितनी गृहणी हैं, दूसरे सज्जन हैं, सब निर्णय करें कि एक दाना भी हम ज़ाया नहीं करेंगे, हम संभाल के रखेंगे, संभाल के खरीदेंगे, संभाल के रखेंगे। तो यह महीने भी बिना कठिनाई के पार हो सकते हैं। जो भी नाजायज़ तरीके से कुछ दबा के रखें तो कानून अपने हाथ में नहीं लेना है, लेकिन ज़रूर उसकी इत्तला देनी है कि हमारे मोहल्ले में ऐसा हो रहा है। ऐसा वातावरण बनाना है कि वो आदमी रख ही नहीं सके उस के माल को। कुछ लेकिन लोग समझते हैं कि आन्दोलन करना या बन्द करना, इससे जनता की आवाज़ ऊपर उठ रही है। आवाज़ ज़रूर उठती है, लेकिन साथ ही साथ क्या होता है, काम बन्द होता है, कभी लूट-मार होती है, कभी दूसरे प्रकार की हिंसा होती है, और वही सब चीजें जो चाहिये उनमें और कठिनाई पैदा होती है, उससे भी दाम फिर बढ़ते हैं। अगर अनाज की लूट होगी तो ज़रूर वह ठीक जगह वो अनाज नहीं पहुंचेगा और दाम और बढ़ेंगे। अगर हड़ताल होगा बिजली घर में, आपने दिल्ली वालों ने और दूसरे जगह भी देखा कि कितनी कठिनाई साधारण जनता को होती है। तो इस समय किसान जो हमारे अन्नदाता हैं, जिन पे देश की सारी आर्थिक ढांचा जिन पर निर्भर है, उनका ज़बर्दस्त कर्त्तव्य इस समय है, अपना उत्पादन उत्पादन बढ़ायें और उस उत्पादन को सरकार को दें, जिसमें उस का ठीक से वितरण हो सके। अनाज होना काफी नहीं है अगर वो जनता तक पहुंच नहीं सकता है। तो पहले पैदावार है, फिर उसको जमा करना है, और फिर उसको सारी जनता को पहुंचाना है। इस काम में हम सब को मिल के लगना है।

अब कुछ बिजली बढ़ाने के भी प्रबन्ध हुए हैं, पैदावार बढ़ाने के भी प्रबन्ध हुए हैं, और यह जो कुछ कठिनाइयाँ थीं यह पहले से कम हैं। संग संग यह देखना है कि जैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग है, अपनी आवाज़ उठाने की मांग है, वैसे ही सब लोग आशा करते हैं कि हिंसा न हो, प्रबन्ध ठीक हो। तो अगर इन दो चीजों में टकराव आता है तो वो हानि भी

साधारण जनता पे उसका भी बोझ पड़ता है ।

इस समय हम जो कर्मचारी हैं वो भी नए भारत के एक बहुत महत्वपूर्ण अंग हैं । हमारी उन्नति औद्योगिक उन्नति उन पे निर्भर है । उनकी भी माँगें हैं मुझे मालूम है, और हम हड़ताल को मानते हैं कि एक साधन है यह माँग पूरी करने का, लेकिन देश के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब कुछ दिन केलिए अपनी मांग अपनी जरूरत भी कुछ अलग रख देनी होतीहै, दूसरों के हित, देश की सेवा केलिए, और यह आज वो समय है । हमारी आशा है कि जो लोग कि कोई कारखाना बन्द नहीं करेगा, मिल मालिक हो, उद्योगपति हो, चाहे कुछ भी उसकी कठिनाई हो, वो कठिनाई सह के देखना है कि किसी न किसी तरह से मिल और कारखाने चालू रहें । इसी तरह से मेरी प्रार्थना अपने कर्मचारी भाइयों से है कि वो भी, कोई हम दूसरा रास्ता मिल के, बात कर के रस्ता निकालें कि कठिनाइयाँ और मतभेद दूर हों लेकिन उत्पादन किसी तरह से कम न हो, यह वो समय जिम्मेदारी का और ऐसे निर्णय लेने का समय आया है । इसी तरह से जो साधारण जनता है उसको भी देखना है कि कैसे वो हर काम में उसका क्या दायित्व है । कुछ बातें हम आपको बता सकते हैं, बहुत सी बातें आप सोच सकते हैं, आप बता सकते हैं, क्योंकि हमारे लोकतंत्र के मतलब यह नहीं है कि केवल आप अपना वोट दें । आपने, भारत की जनता ने चुनाव में हमारा साथ दिया और हमने कोशिश की कि ऐसे कदम उठायें जिसमें छोटे से छोटे आदमी का आत्मविश्वास बढ़े, जिसमें भारत का मस्तक ऊंचा हो और हुआ । लेकिन उसके बाद क्या हम कह सकते हैं कि सब लोगों ने अपनी जिम्मेदारी निभायी । हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखा है कि चाहे सुख हो, चाहे दुःख हो, चाहे कठिनाई हो, चाहे आराम हो इस सब को ज़रा सन्तुलन से देखना चाहिये । लेकिन होता क्या है अगर कुछ अच्छी बात होती है तो हम आसमान पे चढ़ जाते हैं, और जरा सी कठिनाई आती है तो अपना दिल ही छोड़ देते हैं । तो यह प्रश्न है कि इस देश में हम रोने वाले लोग होंगे, शिकायत करने वाले लोग होंगे, या हिम्मत से कठिनाई, कष्ट और खतरे का सामना करने वाले लोग होंगे । यह प्रश्न आज हमारे नौजवानों के और हमारे बूढ़ों के सामने भी है ।

आज के जलसे में हमारे बहुत से स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी बैठे हैं। उनकी आयु तो ज्यादा है लेकिन उन्होंने सब ने मुझे आ के बताया कि दिल उनके उतने ही जोशीले हैं जितने कि पचास साल, चालीस साल, तीस साल पहले थे। तो यह सब नौजवान चाहे नौजवानों की कोई भी उम्र हो, उनसे आज हम कुछ मार्गदर्शन मांगते हैं और कुछ से हम उनकी हिम्मत और उनका सहयोग मांगते हैं, इस कठिन काम में हमारा साथ दें। (तालियां)

यह वर्षा आये या न आये, देश को आगे जाना ही है, जो हमारे कार्यक्रम हैं वो पूरे करने ही हैं। युद्ध हो या शांति हो कुछ भी हो, हमारे जो आगे बढ़ने की रफ्तार है उसको हमको कम करने देना नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि योजना को बन्द कर दो। कितनी खतरनाक बात है। इसके माने हैं कि आज के आराम केलिए हम भारत के भविष्य को सो डालें, गरीबों पर ध्यान न दें। योजना तो बन्द नहीं हो सकती और न होगी। (तालियां)

पिछले दफे जब मैं थी, मैंने आपको बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कुछ परिवर्तन आ रहे हैं, यह जारी है, दृश्य बदल रहा है। नई नई दोस्तियां बन रही हैं। हमें दुःख है कि हमारे महाद्वीप में अभी भी जैसी शांति होनी चाहिए थी, जैसे समझौते होने चाहिये थे, वो अभी नहीं हो पाये हैं। हमें लोग दोष देते हैं जो अभी भी यहां पे जंग के कैदी हैं। आपको मालूम है इसकी सारी कहानी, यहां मैं नहीं दोहराऊंगी। आपको यह भी मालूम है कि कुछ बंगला देश की सरकार ने और हमने कुछ सुझाव सुझाव दिये और वो उदार सुझाव हैं, अच्छे सुझाव हैं, और सारी दुनियां ने उनका स्वागत किया है। कुछ बात-चीत चली और कुछ थोड़े दिन बाद और होने वाली है। अगर इसमें कामयाबी प्राप्त नहीं होती है तो भारत की जनता, सारी दुनियां की जनता, और पाकिस्तान की जनता भी यह जान जायेगी कि इस में दोष न हमारा है, और न बंगला देश सरकार का है, अच्छी तरह से जानेगी कि अगर यह कैदी वापिस नहीं जा रहे हैं तो किस का दोष है, कौन रुकावट इसमें डाल रहा है।

हमने और आपने मिल के बहुत से परीक्षाओं का सामना

किया है । कभी इसमें से चमकते निकले, और कभी इतनी कामयाबी नहीं हुई । आज एक जबर्दस्त अग्नि परीक्षा में से हमको गुजरना है और अगर इसमें से हम हिम्मत से, खून के इसमें से निकलते हैं तो जैसे जब सोना आग में पड़ता है तो कुन्दन बन के निकलता है वो हम अपने देश में इस जनता को इस देश को ऐसा हम बना सकते हैं । तो आज मैं फिर वही प्रश्न आप से पूछूंगी कि हम किस प्रकार का भविष्य चाहते हैं और किस प्रकार की जनता चाहते हैं । हम चाहते हैं जनता जिस की आशा कभी न टूटे चाहे कुछ भी हो जाये, हम चाहते हैं जनता जिस की हिम्मत बढ़ती ही चली जाये, हम चाहते हैं जनता जिस की आवाज़ दुनियां के कोने कोने में गूंजे शांति केलिए, दोस्ती केलिए, एक नए दुनियां केलिए एक नए आदर्शों केलिए । बहुत से बड़े बड़े आदर्श हमारे महान नेताओं ने हमारे सामने रखे और उनको हमको पूरा करना है । लेकिन वो भी हमारे लिये काफी नहीं है । आज एक नई पीढ़ी हमारे देश में है, उससे हम आशा करते हैं कि नई रोशनी वो पीढ़ी हमको दिखायेगी, वो संयम से काम लेगी, बहादुरी से काम लेगी, और यह जो हमारे सेनानी यहां बैठे हैं इनको दिखायेंगे कि इनसे वो कम नहीं हैं, उनके कई कदम आगे हैं और नया भारत बना के दिखायेंगे (तालियां)

भाइयो, बहनो, प्यारे बच्चों चाहे आप यहां मेरे सामने हों, और चाहे अपने टेलीविज़न के, या रेडियो के सामने हों, भारत के कोने कोने में हों, मेरे संग मिल के जयहिन्द का नारा बोलिये, यह नारा जो भारत की स्वतंत्रता का नारा है, भारत की एकता का नारा है, भारत की मज़बूती का नारा है, भारत के उज्ज्वल भविष्य का नारा है, बोलिये जयहिन्द (जनता-जयहिन्द) जयहिन्द (जनता-जयहिन्द) जयहिन्द (जनता-जयहिन्द) ।